नागौर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि का अध्ययन

शोध निर्देशिका
डॉ. प्रभा शर्मा

शोधार्थी
विनोद कुमार वर्मा

महाराजा सूरजमल बृज विष्वविद्यालय
भरतपुर,राजस्थान,भारत।

सार

भावात्मक बुद्धि व्यक्तियों को अपनी अन्तर्निहित शक्तियों एवं प्रयोजन के अनुरूप कार्य करने हेतु अभिप्रेरित करती है तथा अपनी अनेकों आन्तरिक शक्तियों, मूल्यों एवं आकांक्षाओं को सक्रिय बनाती है। यह उन्हें सोचने के स्थान पर क्रिया करने के लिए प्रेरित करती है। यह व्यक्ति की अपनी भावनाओं एवं अन्य लोगों की भावनाओं को स्वीकार करने तथा समझने में सहायता प्रदान करती है। इतना ही नहीं यह व्यक्ति की अपनी एवं अन्य लोगों की भावनाओं के प्रति अनुक्रिया करने तथा अपने दैनिक जीवन एवं कार्यों में संवेगों की ऊर्जा को प्रभावी ढ़ंग से लगाने के लिए भी मदद करती है। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य नागौर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि का अध्ययन है। शोध के लिए नागौर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के 600 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया। शोध में भावात्मक बुद्धि के मापन हेतु डॉ. एस. के. मंगल तथा डॉ. शुभ्रा मंगल के द्वारा निर्मित भावात्मक बुद्धि मापनी का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में नागौर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि का एवं उसके समस्त आयामों अन्तः वैयक्तिक जागस्कता, अन्तर वैयक्तिक जागस्कता, अन्तः वैयक्तिक प्रबन्ध एवं अन्तर वैयक्तिक प्रबन्ध का स्तर निम्न स्तर का पाया गया।

की शब्द :– भावात्मक बुद्धि, उच्च माध्यमिक स्तर।

1.1 प्रस्तावना :–

भावात्मक बुद्धि व्यक्तियों को अपनी अन्तर्निहित शक्तियों एवं प्रयोजन के अनुरूप कार्य करने हेतु अभिप्रेरित करती है तथा अपनी अनेकों आन्तरिक शक्तियों, मूल्यों एवं आकांक्षाओं को सक्रिय बनाती है। यह उन्हें सोचने के स्थान पर क्रिया करने के लिए प्रेरित करती है। यह व्यक्ति की अपनी भावनाओं एवं अन्य लोगों की भावनाओं को स्वीकार करने तथा समझने में सहायता प्रदान करती है। इतना ही नहीं यह व्यक्ति की अपनी एवं अन्य लोगों की भावनाओं के प्रति अनुक्रिया करने तथा अपने दैनिक जीवन एवं कार्यों में संवेगों की ऊर्जा को प्रभावी ढ़ंग से लगाने के लिए भी मदद करती है।

कूपर एवं स्वाफ (1997) ने भावात्मक बुद्धि को जानकारी, साहचर्य तथा प्रभाव को महसूस करने, समझने तथा संवेगों को मानक ऊर्जा के स्रोत के रूप में लाने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया है।

भावात्मक बुद्धि की निम्नलिखित पांच विशेषताएं एवं क्षमताएं हैं (गोलमेन – 1995)

1.2 प्रस्तुत शोध की आवश्यकता

प्राचीन काल से मानव जीवन का एक ही प्रमुख उद्देष्य है। प्रसन्न रहना व स्वस्थ जीवन व्यतीत करना। किन्तु वर्तमान समाज का स्वरूप मनुष्य जीवन के व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों पक्षों को प्रभावित कर रहा है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लगातार दबाव में वृद्धि होती जा रही है। वर्तमान समय में मानव विकास, आधुनिक तकनीक पर निर्भर होता जा रहा है। जिसके कारण भावात्मक,बौद्धिक व शारीरिक दबाव बढ़ता ही जा रहा है। समाज का प्रत्येक वर्ग आज इस दबाव व तनाव का षिकार है। बालकों को आज अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिसके कारण उनमें मानसिक अषांति, क्रोध, तनाव, चिन्तन, एकांकीपन आदि अनेक समस्याओं का जन्म होता है। भावात्मक बुद्धिमत्ता जीवन में बढ़ती हुई समस्याओं का समाधान करने में सहायक होती है।

उपर्युक्त वर्णित तथ्यों से स्पष्ट होता है कि एक व्यक्ति की भावात्मक बुद्धि का सम्बन्ध उच्च स्तर के क्रियाषील कार्य में कामयाब होने से उच्च स्तर की आत्मक्षमता से है। शोधकर्ता के मन में बार–बार यह जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि विद्यार्थियों के जीवन में आत्मक्षमता, कार्यो की क्रियाषीलता तथा उच्च निर्णयों का विषेष स्थान होता है तो उसकी भावात्मक बुद्धि पर नागौर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिंग एवं क्षेत्र का क्या प्रभाव पडता है? इसका अध्ययन करने के लिए प्रस्तुत शोध समस्या का चयन किया।

1.3 शोध समस्या कथन :–

नागौर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि का अध्ययन

1.4 शोध के उद्देश्य

1. नागौर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
2. नागौर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि का लिंग (छात्र एवं छात्रा) के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. नागौर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि का क्षेत्र (ग्रामीण एवं शहरी) के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.5 शोध की परिकल्पनाए

1. नागौर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि का स्तर औसत है।
2. नागौर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं की भावात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. नागौर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

1.6 सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

समस्या से सम्बन्धित एवं समस्या के अनुरूप सम्बन्धित साहित्य का उल्लेख किया गया है। प्रत्येक शोध में सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन एक महत्त्वपूर्ण एवं तर्कयुक्त कार्य है। इससे समस्या की गहनता के साथ–साथ समस्या की स्पष्टता तथा शिक्षा जगत में उसके महत्त्व की जानकारी प्राप्त होती है। किसी भी शोध अध्ययन द्वारा भावात्मक बुद्धि को लेकर पृथक रूप से किसी प्रकार का शोध नहीं किया गया है।

1.7 शोध में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

1.7.1 उच्च माध्यमिक स्तर

कक्षा दसवी तक की शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् और महाविद्यालयी स्तर की शिक्षा ग्रहण से पूर्व इस बीच में दो वर्ष तक जो शिक्षा ग्रहण की जाती है, उसे ही उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा कहते हैं तथा इन दोनों वर्षो के स्तर को 'उच्च माध्यमिक स्तर' के नाम से जाना जाता है।

1.7..2 भावात्मक बुद्धि

जॉन डी. मेयर तथा पीटर सेलोवे द्वारा 1997 में प्रकाशित अपनी पुस्तक ''भावात्मक विकास एवं भावात्मक बुध्दि'' में भावात्मक बुध्दि पद को निम्न प्रकार परिभाषित किया है– ''भावात्मक बुध्दि को एक ऐसी क्षमता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिससे चार विभिन्न रूपों में संवेगों को उचित दिशा देने में मदद मिले, जैसे संवेग विशेष का प्रत्यक्षीकरण करना, उसका अपनी विचार प्रक्रिया में समन्वय करना, उसे समझना तथा उसका प्रबन्धन करना।''

रसैल (1992) के अनुसार ''भावात्मक बुद्धि एक योग्यता है, जिसमें व्यक्ति लोगों को समझने तथा उनके बीच सम्बन्ध स्थापित करता है।''

सोलोवे एवं मायर (1993) ने भावात्मक बुद्धि को परिभाषित करते हुए स्पष्ट किया कि भावात्मक बुद्धि अपने एवं अन्य के अनुभवों तथा संवेगों के बीच विभेदन के लिए मूल्यांकन की एक योग्यता है। व्यक्ति इस समझ का उपयोग अपने चिन्तन तथा क्रिया को सांवेगिक तथा बौद्धिक विकास हेतु निर्देशन में करता है।

गोलमेन (1995) ने ही सबसे पहले भावात्मक बुद्धि की अवधारणा को विकसित किया और उसकी यह मान्यता है कि मानव जीवन की सफलता में बुद्धि का 20 प्रतिशत तथा भावात्मक बुद्धि का 80 प्रतिशत योगदान रहता है।

1.8 शोध का परिसीमांकन

प्रस्तुत षोध अध्ययन में राजस्थान राज्य के नागौर जिले के विद्यार्थियों के विकास के लिए सुझाव तक ही सीमित रहेगा, इसका परिसीमन इस प्रकार किया जायेगा –

1 प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए राजस्थान राज्य के नागौर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों को चुना गया है ।

2 समय व धन आदि के अभाव में प्रस्तुत अध्ययन के लिए राजस्थान राज्य के नागौर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के 600 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को लिया गया है ।

3. अध्ययन में मानकीकृत भावात्मक बुद्धि मापनी का हीं प्रयोग किया गया है।

1.9 न्यादर्श–प्रस्तुत शोध में न्यादर्श का चुनाव राजस्थान राज्य के नागौर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को लिया गया है । इस षोध कार्य के लिए दत्त संग्रहण हेतु कुल 600 उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है ।

1.10 शोध कार्य में प्रयुक्त शोध विधि

वर्तमान शोध में शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है ।

1.11 शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरण

शोध समस्या के परिप्रेक्ष्य में प्रदत्त संकलन हेतु निम्न मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया है –

भावात्मक बुद्धि के मापन हेतु डॉ. एस. के. मंगल तथा डॉ. शुभ्रा मंगल के द्वारा निर्मित भावात्मक बुद्धि मापनी का प्रयोग किया गया है ।

1.12 शोध कार्य में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियॉं

प्रस्तुत शोध में मध्यमान, माध्य विचलन , टी–परीक्षण, रेखाचित्र तथा आवश्यकतानुसार सांख्यिकी का आँकड़ों के विश्लेषण में प्रयोग किया गया है ।

1.13 प्रस्तुत अध्ययन के शोध निष्कर्ष

कार्य समाप्ति के पश्चात परिणाम अथवा निष्कर्ष निकाला जाता है एवं उसके गुण एवं दोषों का पता लगाया जाता है। वर्तमान शोध कार्य के प्रभाव को जानने के लिए निष्कर्षा का वर्णन किया गया है

1.13.1 नागौर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि के प्राप्तांकों का विश्लेषण

- नागौर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि का एवं उसके समस्त आयामों अन्तः वैयक्तिक जागस्कता, अन्तर वैयक्तिक जागस्कता, अन्तः वैयक्तिक प्रबन्ध एवं अन्तर वैयक्तिक प्रबन्ध का स्तर निम्न स्तर का पाया गया। कुमार, एम. (2020) ने अपने अध्ययन ए स्टडी ऑन द इमोशनल इंटेलिजेंस ऑफ हायर सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेंट्स में पाया की उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता औसत दर्जे की होती है। संभवतः वर्तमान में बालक स्क्रीन में समय टाइम में ज्यादा व्यतीत करता हैं,जैसे टीवी, मोबाइल देखने में या फिर चैटिंग करने में अधिक समय व्यतीत करता है जिससे उसमें भावनाओं का अभाव या कमी हो जाती है हालांकि निम्न भावात्मक स्तर, बालकों में एंजायटी या चिंता स्तर की वृद्धि करता है एवं माता–पिता का भी अपने काम में व्यस्त होना एवं पैसा कमाने के पीछे भागना जीवन का एक उद्देश्य बन गया है उसके कारण बालक सफर करता है तथा निम्न भावात्मक स्तर का एक संभावित कारण संयुक्त परिवारों का विघटन होकर एकांकी परिवारों का होना भी है। एकांकी परिवार के कारण भी बालकों में भावनाओं का विकास कम होता है । अतः स्पष्ट है कि भावात्मक बुद्धि का स्तर उपर्युक्त कारणों के कारण निम्न हो सकता है।

1.13.2 नागौर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं की आध्यात्मिक बुद्धि का तुलनात्मक विश्लेषण

- नागौर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की छात्राओं की कुल भावात्मक बुद्धि एवं उसके आयामों अन्तः वैयक्तिक जागस्कता एवं अन्तर वैयक्तिक जागस्कता का मान नागौर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्रों से अधिक पाया गया, जबकि अन्तर वैयक्तिक प्रबन्ध एवं अन्तः वैयक्तिक प्रबन्ध आयाम में नागौर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्रों का मान नागौर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की छात्राओं से आंशिक अधिक पाया गया।
- नागौर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं की भावात्मक बुद्धि एवं उसके समस्त आयामों अन्तः वैयक्तिक जागस्कता, अन्तर वैयक्तिक जागस्कता, अन्तः वैयक्तिक प्रबन्ध एवं अन्तर वैयक्तिक प्रबन्ध में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- कुमार एम. (2020) ने अपने अध्ययन ए स्टडी ऑन द इमोशनल इंटेलिजेंस ऑफ हायर सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स में पाया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्राएं अपनी भावात्मक बुद्धिमत्ता के मामले में छात्रों से बेहतर हैं। किन्तु उनमें सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं । उपर्युक्त अध्ययन प्रस्तुत शोध के निष्कर्षो का समर्थन करते है। बच्चे चाहे वो बालक हो अथवा बालिका आजकल दोनों की परवरिश समान होती है,अतः दोनों में उत्पन्न भावनाए भी समान होती है।

1.13.3 नागौर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आध्यात्मिक बुद्धि का तुलनात्मक विश्लेषण

- नागौर जिले के ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कुल भावात्मक बुद्धि एवं उसकें आयामों अन्तः वैयक्तिक प्रबन्ध एवं अन्तर वैयक्तिक प्रबन्ध का मान नागौर जिले के शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों से अधिक पाया गया, जबकि अन्तः वैयक्तिक जागस्कता एवं अन्तर वैयक्तिक जागस्कता आयामों में नागौर जिले के शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का मान नागौर जिले के ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों से अधिक पाया गया ।
- नागौर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि एवं उसके समस्त आयामों अन्तः वैयक्तिक जागस्कता, अन्तर वैयक्तिक जागस्कता, अन्तः वैयक्तिक प्रबन्ध एवं अन्तर वैयक्तिक प्रबन्ध में सार्थक अन्तर पाया गया। मध्यमान को देखने पर ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों ने शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक अंक प्राप्त किये है। संभावित कारण यह हो सकता है कि ग्रामीण परिवेश में बच्चें अपना अधिकांश खाली समय अन्य व्यक्तियों के साथ बातचीत करने में बिताते हैं और साथ ही वे प्रकृति के निरंतर संपर्क में रहती हैं जो उनकी आत्म–जागरूकता को बढ़ाती है, उनकी भावनाओं को समझने और प्रबंधित करने में सहायता करती है। ग्रामीण बच्चें अधिकांश समय अपने आस–पास उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखते हुए यथार्थवादी ढंग से अपने लक्ष्य निर्धारित करते हैं। ग्रामीण बच्चें सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखते हैं और वे धैर्यवान और विनम्र होने के कारण शांति बनाए रखने की कोशिश करते हैं जो सामाजिक मानदंडों और सांस्कृतिक रूप से पालन–पोषण के कारण सहानुभूति, प्रेम और स्नेह के साथ एकीकृत होता है। मोहम्मद मुज़फ़्फ़र लोन (2015) ने यह पता लगाने के लिए अध्ययन किया कि क्या भौगोलिक अंतर ग्रामीण और शहरी छात्रों के बीच भावात्मक बुद्धिमत्ता के विकास को प्रभावित करते हैं। टी–टेस्ट से गुजरने के बाद अध्ययन के नतीजों से पता चला कि ग्रामीण और शहरी छात्रों की भावात्मक बुद्धिमत्ता (समग्र स्कोर) के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था। लेकिन भावात्मक बुद्धिमत्ता के कारक डी (भावात्मक स्थिरता) और कारक एच (मूल्य अभिविन्यास) पर दोनों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- अंसारी, एस.एस. (2002). साइकोलॉजी फाउण्डेशन ऑफ एजूकेशन, नई दिल्ली, संजय प्रकाशन।
- अहलूवालिया, आर.पी. (1968). शिक्षा मनोविज्ञान, कानपुर, मीनाक्षी प्रकाशन।
- अग्रवाल, जे.सी. (2009): शिक्षा मनोविज्ञान, दिल्ली, शिप्रा प्रकाशन।
- अस्थाना, रामनारायण व अस्थाना (1990). मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
- सेवानी,अशोक (20). शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन ।